मिट्टी के रुद्राक्ष की माला

चर्चा में क्यों?

मिट्टी के रुद्राक्ष की मालाओं की बढ़ती लोकप्रियता के साथ **मध्य प्रदेश** महिला सशक्तीकरण और **स्थायी शिल्प कौशल** के लिये एक अग्रणी राज्य बन गया है।

- इसे नर्मदा नदी की मिट्टी का उपयोग करके महिला कारीगरों द्वारा कुशलतापूर्वक तैयार किया गया है।

मुख्य बिंदु

- मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड (MPTB) की अगुवाई में महिला सशक्तिकरण और स्थायी शिल्प कौशल ने न केवल स्थानीय कलात्मकता को सम्मानित किया है, बल्कि महिलाओं के लिये रोजगार के नए रास्ते भी खोले हैं।
- **MPTB की महिलाओं के लिये सुरक्षित पर्यटन स्थल पहल** के एक हिस्से के रूप में, साँची क्लस्टर की महिलाओं और लड़कियों को **'माटी कला शिल्प' योजना के माध्यम से मिट्टी कला का प्रशिक्षण दिया जाता है।**
  - प्रशिक्षण कार्यक्रम में **पारंपरिक मिट्टी शिल्प विधियों के संरक्षण** और आधुनिक तकनीकों को शामिल करने के बीच संतुलन पर ज़ोर दिया जाता है।
    - महिला कारीगरों को **मिट्टी की तैयारी, ढलाई, सुखाने, फिनिशिंग और गुणवत्ता नियंत्रण की प्रक्रियाएँ** सिखाई जाती हैं ताकि वे बाज़ार की मांगों को पूरा कर सकें।
- **200 से अधिक महिलाओं को** मिट्टी से बनी विभिन्न तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया है, जिसमें **मिट्टी से बनी** और **बिना मिट्टी से बनी दोनों तकनीकें शामिल हैं, जिससे उन्हें साँची स्तूप, दीये, सजावटी बरतन, पशु मूर्तियाँ** और **खिलौने** सहित विविध प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करने में सहायता मिली है।
- इस पहल से साँची में महिलाओं की आजीविका में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जहाँ अब कई महिलाएँ **14,000 से 15,000 रुपए की स्थिर मासिक आय अर्जित कर रही हैं।**
- **कारीगरों ने अपनी पहुँच साँची से आगे** भोपाल और जबलपुर जैसे शहरों तक भी बढ़ा ली है और विभिन्न क्षेत्रों से मान्यता और प्रोत्साहन प्राप्त कर रहे हैं।
  - उनकी सफलता में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर तब आया जब एक निजी होटल शृंखला ने **प्रतिमाह लगभग 2,000 मालाओं का ऑर्डर देना शुरू किया।**
- वर्तमान में, महिला समूह ने उत्पादन को बढ़ाकर लगभग **5,000 मासिक मालाओं तक पहुँचाया** है और MPTB के सहयोग से नए बाजार के अवसरों की खोज जारी रखी है।

नर्मदा नदी

//

- **परिचय:**
  - **नर्मदा नदी** (जिसे रेवा के नाम से भी जाना जाता है) उत्तर और दक्षिण भारत के बीच पारंपरिक सीमा का काम करती है।
  - यह **मैकाल पर्वत की अमरकंटक चोटी** से अपने उद्गम स्थल से 1,312 किमी. पश्चिम में स्थित है। यह **खंभात की खाड़ी** में गिरती है।
  - **यह नदी मध्य प्रदेश** के एक बड़े क्षेत्र के अलावा महाराष्ट्र और गुजरात के कुछ क्षेत्रों को जल प्रदान करती है।
  - यह प्रायद्वीपीय क्षेत्र की पश्चिम की ओर बहने वाली नदी है जो उत्तर में **वंध्य पर्वतमाला** और दक्षिण में **सतपुड़ा पर्वतमाला** के बीच दरार घाटी से होकर बहती है।
  - **सहायक नदियाँ:**
    - दाहिनी ओर से प्रमुख सहायक नदियाँ **हिरन, तेंदोरी, बरना, कोलार, माण, उरी, हथनी** और **ओरसांग हैं।**
    - प्रमुख बाईं सहायक नदियाँ **बरनर, बंजार, शेर, शक्कर, दूधी, तवा, गंजाल, छोटा तवा, कुंडी, गोई** और **करजन** हैं।
- **बाँध:**
  - नदी पर बने प्रमुख बाँधों में **ओंकारेश्वर** और **महेश्वर बाँध शामिल हैं।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/clay-rudraksha-garlands